B.Ed. 1st Year
Session – 2019-2020/2021
Subject – Contemporary India & Education
Course – C-2/**Unit** – 2(a)
Topic – **माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्य**
(Aims of Secondary Education)

Dr. Amod Kumar Sinha
(Assistant Professor)
Department of Education
A.N. D. College
Shahpur Patory
Samastipur

Lecture No. - 85

माध्यमिक शिक्षा आयोग (**मुदालियर आयोग** 1952-53) माध्यमिक शिक्षा के व्यापक उद्देश्य निर्धारित किए जिनका विस्तृत वर्णन इस प्रकार है -

1. **लोकतात्रिक नागरिकता का विकास** - लोकतंत्र की सफलता उन व्यक्तियों पर निर्भर करती है जो अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों के बारे में जगरूक होकर अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते हैं। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तियों के अंदर सही या गलत के अंतर की समझ का विकास करना होता है। प्रजातांत्रिक समाज में नागरिकता एक चुनौती होती है। इसके लिए व्यापक स्तर पर प्रशिक्षण आवश्यक है। प्रजातांत्रिक समाज में नागरिकों में बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक, एवं राजनैतिक गुणों का विकास होना अति महत्वपूर्ण है। इसे शिक्षा द्वारा विकसित किया जा सकता है। शिक्षित व्यक्ति विभिन्न प्रकार की समस्याओं को समझने के योग्य होता है एवं वह यथासंभव उसे हल करने का प्रयत्न करता है। इसके निम्नांकित कारण हैं -

   a) **स्पष्ट सोच** - शिक्षा व्यक्ति की सोच एवं व्यक्तित्व का विकास करती है। शिक्षा व्यक्ति को सत्य-असत्य, सही-गलत आदि के बारे में किसी निष्कर्ष पर पहुँचने में सहायता करती है तथा संकीर्णता, पक्षपात आदि का विरोध करने में समर्थ बनाती है।

   b) **बोलने एवं लिखने में स्पष्टता** -शिक्षित व्यक्ति बातचीत द्वारा अपने विचारों को स्पष्ट रूप से प्रकट करने में निपुण होता है। इससे सुनने

वाला व्यक्ति शीघ्र ही प्रभावित होता है। इससे प्रजातांत्रिक ढाँचे का व्यापक विकास होता है।

c) **समाज के साथ रहने की कला** - मान-सम्मान का प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान होता है। प्रत्येक व्यक्ति की इच्छा होती है कि उसे दूसरों से सम्मान प्राप्त हो। इसलिय यह आवश्यक है कि वह दूसरों के साथ मेलजोल बढ़ाए और उनके प्रति सम्मान की भावना प्रकट करे। इससे समूह में कार्य करने एवं अनुशासन की भावना का विकास होता है।

2. **व्यक्तित्व का विकास** - लोकतांत्रिक समाज की सफलता वहां के लोगों पर निर्भर करती है। वह चाहे पुरूष हो या स्त्री, अल्पसंख्यक हो या बहुसंख्यक, सभी का समाज में महत्वपूर्ण योगदान होता है। यह तभी संभव हो सकता है जब उस समाज के नागरिक उत्तम व्यक्तित्व के स्वामी हों। ऐसा इसलिए कि उत्तम व्यक्तित्व वाले व्यक्ति का शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक पक्ष मजबूत होता है। उसके अंदर विभिन्न प्रकार की रूचियाँ होती हैं। इस कारण उनके विचार में नवीनता होती है। अतः शिक्षा का उद्देश्य इन गुणों का विकास करना होता है। उन्हें कई प्रकार से प्रशिक्षित किया जाता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए बहुत से महाविद्यालयों एवं विद्यालयों में अतिरिक्त सहायक गतिविधियाँ करवायी जाती हैं। इन्हें पाठ्यक्रम का हिस्सा भी बनाया गया है।

To be continued.....